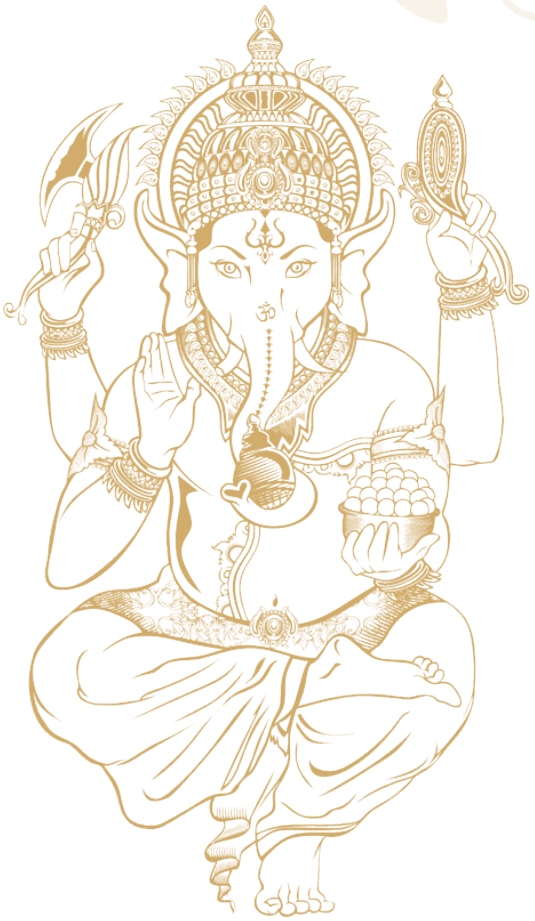

Mr.p

Ms.g

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119155605

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
10/06/1992	जन्म तिथि	15/05/1996
बुधवार	दिन	बुधवार
घंटे 15:00:00	जन्म समय	06:01:00 घंटे
घटी 24:02:20	जन्म समय(घटी)	01:14:15 घटी
India	देश	India
Kaithal	स्थान	Kaithal
29:47:00 उत्तर	अक्षांश	29:47:00 उत्तर
76:29:00 पूर्व	रेखांश	76:29:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:24:04	स्थानिक संस्कार	-00:24:04 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:23:04	सूर्योदय	05:31:18
19:24:06	सूर्यास्त	19:09:56
23:45:22	चित्रपक्षीय अयनांश	23:48:26

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
मंगल 4वर्ष 3मा 24दि	00:33:45	तुला	लग्न	वृष	07:54:43	केतु 6वर्ष 3मा 12दि
गुरु	25:59:30	वृष	सूर्य	वृष	00:39:29	सूर्य
04/10/2014	28:26:46	कन्या	चंद्र	मेष	01:21:42	27/08/2022
04/10/2030	03:05:10	मेष	मंगल	मेष	15:21:09	27/08/2028
गुरु 21/11/2016	07:31:22	मिथु	बुध व	वृष	00:42:10	सूर्य 15/12/2022
शनि 04/06/2019	13:14:55	सिंह	गुरु व	धनु	23:40:45	चन्द्र 16/06/2023
बुध 09/09/2021	25:05:35	वृष	शुक्र	मिथु	03:58:16	मंगल 21/10/2023
केतु 16/08/2022	24:35:57	मक व	शनि	मीन	10:18:01	राहु 14/09/2024
शुक्र 16/04/2025	06:58:10	धनु व	राहु व	कन्या	22:57:48	गुरु 03/07/2025
सूर्य 02/02/2026	06:58:10	मिथु व	केतु व	मीन	22:57:48	शनि 15/06/2026
चन्द्र 04/06/2027	23:19:46	धनु व	हर्ष व	मक	10:45:39	बुध 22/04/2027
मंगल 10/05/2028	24:33:46	धनु व	नेप व	मक	03:52:51	केतु 28/08/2027
राहु 04/10/2030	27:02:25	तुला व	प्लूटो व	वृश्चि	08:08:29	शुक्र 27/08/2028

लग्न-चलित

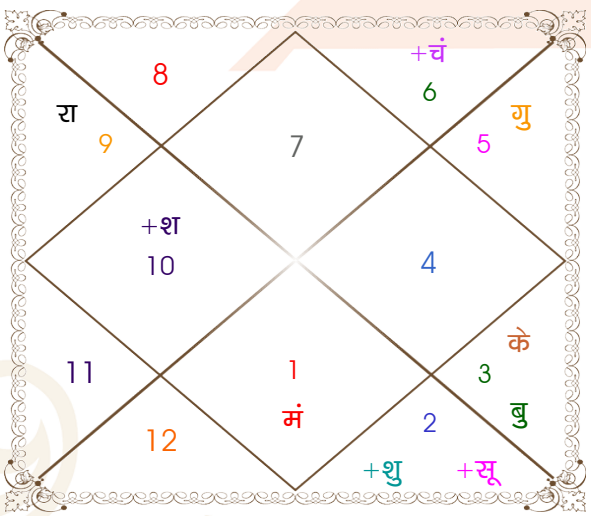

लग्न-चलित

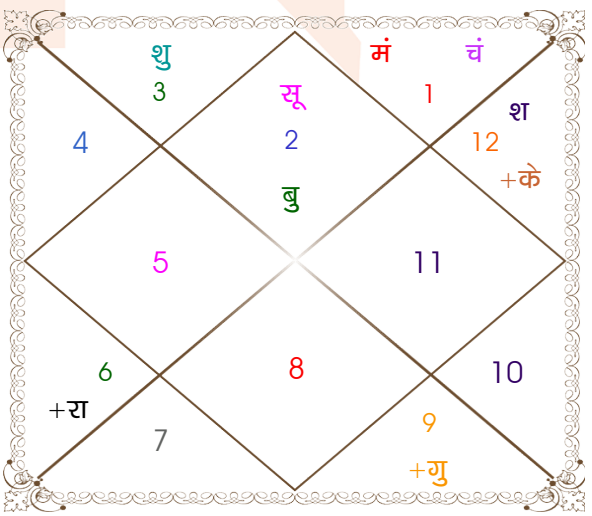

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	क्षत्रिय	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	प्रत्यारि	साधक	3	1.50	--	भाग्य
योनि	व्याघ्र	अश्व	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	बुध	मंगल	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	देव	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	कन्या	मेष	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	13.00		

भकूट दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता नहीं है।

Mr.p का वर्ग मूषक है तथा Ms.g का वर्ग सिंह है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Mr.p और Ms.g का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

Mr.p मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

चतुः सप्तमे भौमो मेषकर्कटे निग्रहः।
कुजदोषो न विद्यते।।

अर्थात् चतुर्थ तथा सप्तम भाव में यदि मेष या कर्क का मंगल हो तो कुजदोष समाप्त हो जाता है। क्योंकि मंगल Mr.p कि कुण्डली में सप्तम् भाव में मेष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

सप्तमो यदा भौमः गुरूणां च निरीक्षिता।
तदास्तु सर्वसौख्यं च मंगली दोषनाशकृत्।।

सप्तम मंगल को गुरु देखता हो मंगली दोष कट जाता है।

क्योंकि Mr.p कि कुण्डली में सप्तम मंगल को गुरु देखता है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

Ms.g मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल Ms.g कि कुण्डली में द्वादश भाव में मेष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल Ms.g कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं चन्द्र Ms.g कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि Ms.g कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु Mr.p कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Mr.p तथा Ms.g में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।